RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 2, Year : 4
Jul.-Aug.-Sep. (2017), Pages : 133 - 138
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

महाकवि निराला के काव्य में राष्ट्रीय एवं सामाजिक अभिव्यंजना

भावना अग्रवाल
शोध छात्रा–हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामनगर (नैनीताल), उततराखण्ड

Received : 30/06/2017 *1st BPR* : 01/07/2017 *2nd BPR* : 05/07/2017 *Accepted* : 09/07/2017

ABSTRACT

निराला का हिन्दी काव्य के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण प्रदेय भाषा में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना माना जाता है। निराला ने कविता को भाषा शैली के परम्परागत ढाँचे से मुक्ति दिलाई। उन्होंने छंद मुक्ति का स्वर फूँका। उन्होंने कहा कि "मनुष्यों की तरह कविता की भी मुक्ति होती है", "आप निकली हुई और गढ़ी हुई भाषा छिपती नहीं"। निराला में सामाजिक क्रान्ति के स्वर बहुत तीखे हैं। निराला ने सामाजिक विषमता को चिह्नित करने वाली कविताओं में क्रान्ति का आह्वान किया और शोषण का हर स्तर पर विरोध किया। पूंजीपतियों के प्रति घृणा की अभिव्यक्ति निराला की कविताओं में इसलिए दिखाई पड़ती है, क्योंकि वे सामाजिक विषमता से पीड़ित थे। निराला जी के काव्य में राष्ट्र प्रेम के उद्‌गार हैं तथा भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने की छटपटाहट है। 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला ने भारत की उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है जो परतन्त्रता की गहरी नींद में सोई पड़ी हैं।

निराला की भावानुभूति ने समाज के किसी भी अंग को अनदेखा नहीं किया है। निराला विद्रोह और आक्रोश के कवि माने जाते हैं। उनके काव्य में सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश और दुःखियों के दर्द को देखकर विकलता की मार्मिक अनुभूति है।

निराला जी की भाषा में कहीं गीत गोविन्द का सा माधुर्य है तो कहीं मेघदूत का सा मार्दव है, कहीं गीतांजलि की नादात्मकता है, तो कहीं मैथिल कोकिल की सी मृदुलता, कहीं भक्त कवियों के गीतों की सी प्रांजलता है, तो कहीं चारण गीतों सी ओजस्विता।

महाप्राण निराला अपने काव्य की जब चरम अवस्था पर पहुँचते हैं तो उनके अंतर्मुख से अनायास ही फूट पड़ता है कि "अभी न होगा मेरा अंत, अभी–अभी तो आया है मेरे जीवन में नवल वसंत"।

वास्तव में महाप्राण निराला का अंत नहीं हुआ है उनकी काव्य अभिव्यंजना हमारे मन में, हृदय में, जेहन में, हमारी आत्मा में अपना अस्तित्व बनाये हुए है। उस अस्तित्व का अहसास प्रत्येक पाठक के मन में नवल वसंत का प्राण फूँकता है, जीवन की राह दिखाता है, संघर्ष करने की क्षमता को प्रदीप्त करता है। उनकी अभिव्यंजना ने काव्य को विभूषित किया है एवं स्वयं को नवल वसंत के पटल पर प्रतिस्थापित किया है।

राष्ट्रीय चेतना

निराला के काव्य में राष्ट्र के प्रति प्रेम के उद्‌गारों ने, भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने की छटपटाहट ने सम्पूर्ण भारतीय समाज को स्वतंत्रता की दहलीज पर लाकर खड़ा कर दिया। 'जागो फिर एक बार' कविता में निराला ने भारत की उन चिर प्रसुप्त शक्तियों को जगाने का प्रयास किया है जो परतन्त्रता की गहरी नींद में सोई पड़ी हैं। वे कहते हैं "आज तुम परतन्त्र हो, दमित हो, किन्तु अतीत में तुम समर सरताज रहे हो तुम्हारा यह दीन भाव नश्वर है, इसे त्याग दो।" –

"जागो फिर एक बार
पशु नहीं वीर तुम समर शूर क्रूर नहीं
काल–चक्र में दबे आज तुम राजकुंवर, समर सरताज
तुम हो महान, तुम सदा हो महान
है नश्वर यह दीन भाव
कायरता, कामपरता

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 133-138 , ISSN 2348 – 3318
भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

ब्रह्म हो तुम
पद रज भर भी है नहीं पूरा यह विश्व भार–
जागो फिर एक बार"

राष्ट्रप्रेम के ओजस्वी भावों से ओत–प्रोत होकर कविवर निराला ने भारत माता के उस साकार रूप की वन्दना की है जिसके पदतल में लंका शतदल (कमल) की भांति सुशोभित है और जिसके चरणों को सागर की उत्ताल लहरें धोती रहती हैं–

"भारति जय विजय करे
कनक शस्य कमल धरे
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ भरे"।

शोषितों के प्रति सहानुभूति

निराला में सामाजिक क्रान्ति के स्वर बहुत तीखे हैं। निराला ने सामाजिक विषमता को चिह्नित करने वाली कविताओं में क्रान्ति का आह्वान किया और शोषण का हर स्तर पर विरोध किया। "तोड़ती पत्थर" नामक कविता में उन्होंने पत्थर तोड़ने वाली उस मजदूरनी का चित्रण किया है जो धूप में तपती हुई पत्थर तोड़ रही है और उसके सामने वे भवन हैं जिनके परकोटे में छायादार पेड़ हैं, सुख–सुविधा के सारे साधन हैं। इस सामाजिक विषमता का चित्रण वे इन शब्दों में करते हैं–

"वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैनें इलाहाबाद के पथ पर।
नहीं छायादार पेड़ वह
जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन भर बंधा यौवन नतनयन प्रिय कर्मरत मन
गुरू हथौड़ा हाथ, करती बार–बार प्रहार–
समने तरूमालिका अट्टालिका प्राकार"

एक भिक्षुक का चित्र निराला निम्न प्रकार उकेरते हैं–

"वह आता दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
पीठ पेट दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को, भुख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली का फेलाता"।

निराला जब भिक्षुक को जूठी पत्तलें चाटते हुए देखते हैं तब उनका मन विद्रोह से भर उठता है–

"चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए "।।

इसी प्रकार 'बादल राग' नामक कविता में कवि विप्लव की सूचना देता है–

"जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार "!

सामाजिक प्रगति चेतना

पूंजीपतियों के प्रति घृणा की अभिव्यक्ति निराला की कविताओं में इसलिए दिखाई पड़ती है, क्योंकि वे सामाजिक विषमता से पीड़ित थे। 'कुकुरमुत्ता' नामक कविता में वे पूंजीपति वर्ग के प्रतीक 'गुलाब' को फटकारते हुए कहते हैं–

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 133-138 , ISSN 2348 – 3318
भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट"

इस सामाजिक विषमता को समाप्त करने के लिए वे 'श्यामा' से अनुरोध करते हुए क्रान्ति का आह्वान करते है–

"एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार
कितने ही हैं असुर चाहिए कितने तुझको हार
कर मेखला मुंड मालाओं की वन मन अभिराम "।

दलितो एवं दीनों के प्रति सहानुभूति रखने वाले निराला समाज में समरसता स्थापित करने के पक्षधर थे। वे समाज के सभी कष्टों का मूल कारण इस विशमता को ही मानते हैं।

मुक्त छंद के प्रणेता : निराला

निराला काव्य की विषय वस्तु में नवीनता का समावेश करने वाले तथा शैली–शिल्प में भी नए प्रयोग करने के पक्षधर थे। छन्द योजना की द्रष्टि से भी निराला एक विद्रोही एवं क्रान्तिकारी कवि हैं। छंद संबंधी प्राचीन मान्यताओं में परिवर्तन करते हुए निराला ने हिन्दी काव्य में "मुक्त छंद" का श्री गणेश किया। कविता को छंद के बंधनों से मुक्ति मिल गई और वह स्वच्छंद गति से प्रवाहित होने लगी। छंदों की कारा से यह मुक्ति कविता के लिए वरदान सिद्ध हुई। हिन्दी काव्य में मुक्त छंद विधान में काव्य रचना करने वाले पहले कवि के रूप में निराला को जाना जाता है। यद्यपि निराला ने सममात्रिक, विषममात्रिक कविताएं भी लिखी हैं लेकिन उनकी रचनाओं में स्वच्छन्द छन्द वाली रचनाएं ही अधिक हैं।

पारम्परिक छन्दों में नवीन प्रयोग करने में भी निराला सिद्धहस्त थे। उदाहरण के लिए उनकी तुलसीदास नामक कविता ली जा सकती है जिसमें कवि ने छह पंक्तियों का एक ऐसा मौलिक छंद लिखा है जिसके चरणों की मात्राएं समान हैं, किन्तु तुकें प्रथम एवं द्वितीय की तथा चतुर्थ एवं पंचम की ही मिलती है, यथा–

"मग में पिक कुहरित डाल–डाल
है हरित विटप सन सुमन माल
हिलती लतिकाएं ताल–ताल पर सस्मित
पड़ता उन पर ज्योति प्रपात
है चमक रहे सब कनक गात
बहती मधु धीर समीर ज्ञात आलिंगित"।

निराला की विषम मात्रिक कविताएं भी विशेष प्रकार की हें जिनमें अंतिम तुकें तो मिलता हैं, किन्तु इनके चरणों की मात्राएं समान नहीं हैं। इन कविताओं में छंद के किसी नियम का पालन नहीं हुआ है अतः इन्हे मुक्त छंद वाली कविताएं कहा जा सकता है। यथा भिक्षुक नामक कविता की ये पंक्तियां देखी जा सकती हैं–

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक।
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली का फेलाता"।।

निराला के कविताओं में छंदगत विषमताओं के साथ–साथ मात्राओं की भी विषमता विद्यमान है। निराला ने काव्य में छंद विधान के क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन करते हुए उस समय स्वच्छंद छंद का प्रयोग किया जब अन्य कवि वार्णिक एवं मात्रिक छंदों में अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर रहे थे। पुरानी पीढ़ी के वयोवृद्ध साहित्यकारों एवं आलोचकों ने निराला का मुखर विरोध किया, किन्तु उन्होंने उसकी रंचमात्र भी परवाह नहीं की और अकेले ही निर्भयता से उनका मुकाबला करते रहे। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की–

"मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बन्धन से छुटकारा पाना है, कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है।... मुक्त काव्य कभी साहित्य के लिए अनर्थकारी नहीं होता, किन्तु उससे साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीन चेतना फैलती है, जो साहित्य के कल्याण की ही मूल होती है।"

निराला ने काव्य को छंद के बन्धन से मुक्त कर उसे पूर्ण स्वच्छंदता प्रदान कर एक अभिनव कार्य किया, जिससे कविता पर लगे हुए बंधन खुल गए और वह सरिता की भांति अविरल प्रवाह से युक्त होकर उछलती–कूदती आगे बहने लगी।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 133-138 , ISSN 2348 – 3318
भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

निराला के काव्य में सद्यःपरनिर्वृत्ति

निराला का जीवन और रचनात्मक जीवन दोनों संघर्षमय रहा है। संघर्ष ने उन्हें अव्यवस्थित भी किया, साथ ही निखारा भी। निराला का 'मैं' लगातार शेष संसार के यथार्थ से टकराता है। निराला, प्रायः संघर्ष में, द्वन्द्व में दिखायी देते हैं। निराला की दृष्टि में जीवन और मृत्यु के द्वन्द्व में मानव–जिजीविशा का अर्थ प्रकट होता है। सन् 1935 में सरोज की मृत्यु हुई, पत्नी की मृत्यु के बाद यह सबसे बडा आघात था। निराला भीतर से टूटे बहुत टूटे पर अपने मानसिक संघर्ष को संतुलित करते हुए हिन्दी साहित्य का प्रथम शोक गीत 'सरोज स्मृति' लिखा, जो कविताएं निराला के जीवन संघर्ष को सबसे ज्यादा खोलती हैं, उनमें यह एक महत्वपूर्ण कविता है–

"कन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
शुचिते पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अतःदधि मुख
लिखता अबाध गति मुक्त छन्द
पर संपादक गण निरानंद
वापस कर देते पढ़ सत्वर
दे एक पंक्ति दो में उत्तर
लौटा लेकर रचना उदास
ताकता हुआ मैं दिशाकाश"

उक्त पंक्तियां निराला के भीतरी विक्षोभ को, उनके विस्फोटक तनाव को प्रकट करती है। अपनी एक अन्य प्रमुख रचना 'राम की शक्ति पूजा' में निराला अपने दुर्भाग्य की विडम्बना को कोसते रहे–'अन्याय जिधर है उधर (शक्ति)' 1958 में निराला ने कविता लिखी–

"आग सारी फुक चुकी है।
रागिनी वह रूक चुकी है।।"

निराला की यह असमर्थता एक अभावग्रस्त व्यक्ति की दीन–हीन स्थिति का चित्र अवश्य है, परन्तु ऐसे व्यक्ति का चित्र नहीं है, जो अपनी विवशताओं से जूझने से घबराकर आत्मसमर्पण कर देता है, टूट जाता है अथवा अपने स्वत्व और स्वाभिमान को भी भूल जाता है। निराला जीवन भर जितने आत्मसम्मानी बने रहे और जिस अड़िग तेजस्विता का परिचय उन्होंने दिया, उसे देखते हुए 'स्मृति' में व्यक्त की गई विवशता और निराला का इतना ही अर्थ रह जाता है कि उसकी दीनता अपनी पुत्री के अधिकाधिक विवर्द्धित गौरव की तुलना में ही दीनता है, किसी अन्य के प्रति निक्षेपित नहीं है– प्रार्थनामय नहीं है और इसीलिए वह पिता की ममता का उज्जवल आलोक विकीर्ण करती है। अपने प्रिय के सन्दर्भ में अपनी अक्षमता का बोध स्नेह भाव की प्रगाढ़ता को ही प्रमाणित करता है और करूणा को दृढ़ आधारभूमि पर प्रतिष्ठित करता है। वास्तव में अपने को भिक्षुक और सरोज को अपने जीवन की स्वर्ण झनक कहकर निराला सरोज की ओर अपनी सम्बद्धता को स्पष्ट कर देते हैं–

''ले चला साथ मैं तुझे कनक
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण झनक
अपने जीवन की प्रभाविमल
ले आया निजभृह छायात्मक।''

अपनी इसी सरोज के लिए निराला विवाह ढूँढ़ रहे थे। कान्यकुब्जों के यहाँ उनकी बात नहीं बनी क्योंकि–''इनके कर कन्या अर्थ खेद...।'' किसी तरह है मिला प्रथम ही विद्वज्जन।'' नवयुवक एक सत्साहित्यिक व्यक्ति था, लेकिन विवाह कैसे हुआ, यह निराला स्वयं ही बताते हैं–

''हो गया विवाह आत्मीय स्वजन
कोई थे नहीं, न आमंत्रण
था भेजा गया विवाह द्वारा
भर रहा न घर निशि दिवस जाग।''

किसी तरह निराला ऋषि कण्व की तरह अपनी पुत्री को विदा करते हैं, परन्तु कण्व तथा निराला दोनो के बीच समानता स्थापित करने वाली केवल शकुन्तला तथा सरोज है। अन्यथा निराला की स्थितियाँ एकदम भिन्न है–

''माँ की शिक्षा मैने दी
पुष्प सेज तेरी स्वयं रची
सोचा मन में वह शकुन्तला

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 133-138 , ISSN 2348 – 3318
भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पर यह अन्य, यह अन्य कला।''

पुत्री की पुष्प सेज रचने वाले पिता के रूप में निराला एक साथ अनेक रूपों में प्रतिबिम्बित हो उठते हैं। पिता के कर्तव्य से मुक्ति पाकर जब निराला सुख की सांस लेते हैं, तभी वह घड़ी आ गई जिसने उन्हें शोक प्लावित कर दिया। कुछ दिन घर रहकर सरोज फिर नानी के यहाँ पहुँच गई, किन्तु दो वर्ष बीतते–बीतते अर्थाभाव में उपचार न होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। यथा–

''मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल
दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।''

युग वर्ष बाद जब हुई विकल के बाद कुछ अनकहा रह गया है। इस पंक्ति तथा तीसरी पंक्ति के मध्य की छूटी हुई रिक्तता को अपने आप ही भरना पडता है। इस रिक्तता की अभिव्यक्ति भाशा के माध्यम से नहीं हो सकती है। दरअसल जहाँ भाषा की अभिव्यक्ति जबाब दे जाती है, वहाँ मौन ही अभिव्यंजना का काम करता है। '' दुःख ही जीवन की कथा रही।'' का इससे बड़ा प्रसंग नहीं मिल सकता है। पुनः एकाएक कवि उबल पडता है–

''हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म रहे, नत सदा माथ
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के से शतदल।''

इस अनुभूति को किसी भी रचनात्मक तर्क से नहीं समझा जा सकता। यह एक कवि की नहीं, एक पिता के भीतर फट पड़ती चीख है। अनुभूति के इस विस्फोट को देखकर ऐसा लगता है कि सरोज का अंत महज एक रचना का अंत नहीं था, सरोज कवि के लिए रचना मात्र नहीं थी, वह इससे कुछ बढ़कर थी। वह शायद कवि के लिए वह जीवन थी जिसमें रचना संभव होती है।

शोक ग्रस्त निराला शिथिल होकर अपने विगत कर्मों का अर्पण करके कन्या का तर्पण करते हैं–

''कन्ये गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।''

कर्मों का अर्पण, पिता हृदय पर लगे गम्भीर आघात की ही कहानी नहीं कहता बल्कि उसकी अभावग्रस्तता की क्रूर और यथार्थ कहानी की ओर भी संकेत करता है। धन के अभाव में जो व्यक्ति साधनों से पुत्री को तर्पण देने की व्यवस्था न कर सका, वह आखिर और कर भी क्या सकता? वास्तव में निराला की इससे करूण गाथा आखिर और क्या हो सकती थी, वास्तव में यदि वह पुत्री को अपना तर्पण अपने कर्मों को भी अर्पित करके न देता तो वह और क्या कर सकता था। निराला सब कुछ त्यागकर एकदम जैसे मौन हो गये। उनकी समस्त चेतना आहत सी हो गयी।

निराला के काव्य में नूतन युगबोध

निराला की लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' पौराणिक होने के साथ–साथ नूतन युगबोध से भी सम्पन्न है। आज भी समाज में 'रावणों' का अभाव नहीं है जो दूसरों की सीता का हरण कर लेते हैं और 'शक्ति' के बल पर राम की विवशता का अट्टहास करते हैं। ऐसे में साधारण जन राम की भांति आंसू बहाने को विवश है–

"फिर सुना हंस रहा अट्टहास रावण खल–खल।
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता दल।।"

इन दुष्ट रावणों ने 'शक्ति' को अपने वशीभूत कर रखा है जिससे राम के बाण अप्रभावी हो रहे हैं। आज के युग में इनकी तामसिक शक्ति है– धनबल, बाहुबल, राजनीतिक बल, ऊँची पहुँच और हथियारों की ताकत। आम आदमी इनके आगे 'राम' की भांति हताश, असहाय, साधनहीन है। उसे निराशा से उबरने में जामवंत जैसे विवेकी, हनुमान जैसे पराक्रमी सेवक, विभीषण जैसे मित्रों की आवश्यकता पडती है।

क्या हुआ यदि रावण ने तामसी शक्ति को अपने वशीभूत कर लिया। हर समस्या का समाधान है, जामवंत ने राम को शक्ति पूजा का सुझाव दिया, किन्तु यह भी कहा कि तुम्हे शक्ति की मौलिक कल्पना करनी है। आज के युग में किसी के अनुकरण से काम नहीं चलता–

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन।
छोड दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन।।"

प्रायः उन्हें लगता है कि विरोधी शक्तियां उनसे लड़ने के लिए संगठित हैं और उन्हें सबसे अकेले ही निपटना है। किन्तु उनकी दुर्दान्त जिजीविशा, टूटे हताश जर्जर जीवन में नये रस का संचार करती रहती थी।

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।।"

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 133-138 , ISSN 2348 – 3318
भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

निराला की भावानुभूति ने समाज के किसी भी अंग को अनदेखा नहीं किया है। निराला विद्रोह और आक्रोश के कवि माने जाते हैं। उनके काव्य में सामाजिक विसंगतियों के प्रति आक्रोश और दुःखियों के दर्द को देखकर विकलता की मार्मिक अनुभूति है।

निराला जी की भाषा में कहीं गीत गोविन्द का सा माधुर्य है, तो कहीं मेघदूत का सा मार्दव है, कहीं गीतांजलि की नादात्मकता है, तो कहीं मैथिल कोकिल की सी मृदुलता, कहीं भक्त कवियों के गीतों की सी प्रांजलता है, तो कहीं चारण गीतों सी ओजस्विता।

निराला स्वयं में एक युग तो हैं ही, युग प्रवर्तक भी हैं। इसी कारण उन्हें 'महाप्राण' और 'निराला' जैसे विभूषणों से अलंकृत किया गया है। महाप्राण निराला अपने काव्य की जब चरम अवस्था पर पहुँचते हैं तो उनके अंतर्मुख से अनायास ही फूट पड़ता है कि "अभी न होगा मेरा अंत, अभी–अभी तो आया है मेरे जीवन में नवल वसंत"।।

वास्तव में महाप्राण निराला का अंत नहीं हुआ है उनकी काव्य अभिव्यंजना हमारे मन में, हृदय में, जेहन में, हमारी आत्मा में अपना अस्तित्व बनाये हुए है। उस अस्तित्व का अहसास प्रत्येक पाठक के मन में नवल वसंत का प्राण फूँकता है, जीवन की राह दिखाता है, संघर्ष करने की क्षमता को प्रदीप्त करता है। उनकी अभिव्यंजना ने काव्य को भूषित किया है एवं स्वयं को नवल वसंत के पटल पर प्रतिस्थापित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, बच्चन : 1961 : क्रांतिकारी कवि निराला, नंदकिशोर एंड संस, वाराणसी।
- वाजपेयी, नंददुलारे : 1965 : कवि निराला, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी।
- सिंह, दूधनाथ : 1972 : निराला : आत्महन्ता आस्था, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।
- चतुर्वेदी, रामस्वरूप : 1986 : हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सिंह, बच्चन : 1986 : आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- शर्मा, रामविलास : 1989 : निराला की साहित्य साधना–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह, नामवर : 1990 : छायावाद, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सिंह, केदारनाथ : 1992 : निराला की कविताएँ : मूल्यांकन और मूल्यांकन, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सैनी, राजकुमार : 1995 : साहित्यस्रश्टा निराला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह, नामवर : 2007 : आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लाकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- शर्मा, रामविलास (सं0) : 2010 : राग–विराग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- शुक्ल, रामचंद्र : 2012 : हिन्दी साहित्य का इतिहास, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
- डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 हरदयाल : 2014 : मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।